ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

बूँदी के पर्यटन व्यवसाय में कला का योगदान

दिनेश कुमार वर्मा
व्याख्याता,
चित्रकला विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान

सारांश

प्राकृतिक सुषमा से आच्छादित बून्दी के ऐतिहासिक धरोहर में सुशोभित कला की संरचना और सांस्कृतिक विविधता के कारण यहाँ पर्यटन व्यवसाय की प्रबल सम्भावनाऐं उत्तरोत्तर बढती रही है। हाड़ा राजपूतों के संरक्षण में पल्लवित और परिपोषित यहाँ की कला आज भी मध्यकालीन कला के सामाजिक और सांस्कृतिक विचारधाराओं का स्मरण करती है। प्रकृति की अतुल रूपराशि में रची–बसी बून्दी के ऐतिहासिक स्थल, गढ़, महल, कलात्मक बावडियाँ, छतरियाँ, मंदिर, शैल चित्र, भित्ति चित्र, लघु चित्र, अंलकृत जालियाँ और शिल्प सृजन के विविध रूपांकन पहली दृष्टि में ही पर्यटकों को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। हालांकि, बून्दी में पर्यटन व्यवसाय का आधार यहाँ का कलात्मक वैभव तो है ही साथ ही प्राकृतिक सुन्दरता और सुषमा से आवृत्त विविध दृश्यों, झीलें, तालाब, शान्त वातावरण और सौम्य मनोहरता से परिपूर्ण पर्यटकों की आवास व्यवस्था तथा विभिन्न सुरूचिकर सुख–सुविधाऐं और सांस्कृतिक विचारधाराएँ भी है जो राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस प्रकार बून्दी के कलामय वतावरण का यह आकर्षण ही पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देता रहा है।

मुख्य शब्द : पर्यटन व्यवसाय से जुड़े ऐतिहासिक धरोहर, गढ़, महल, कलात्मक बावडियाँ, छतरियाँ, मंदिर, कलात्मक वास्तु–शिल्प, शैल चित्र, भित्ति चित्र, लघु चित्र, अंलकृत जालियाँ, नक्काशी और कला सृजन के विविध रूपांकन, एवं रचनात्मकता, प्राकृतिक सुषमा, झीलें, तालाब, शान्त वातावरण और सौम्य मनोहरता से परिपूर्ण पर्यटकों की आवास व्यवस्था तथा विभिन्न सुरूचिकर सुख–सुविधाऐं, पर्यटन व्यवसाय, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारधाराएँ आदि।

प्रस्तावना

प्राकृतिक सौन्दर्य और सुषमा से आवृत हाड़ा राजपूतों के अधीन बूँदी में पल्लवित और परिपोषित कला बूँदी शैली के नाम से विश्वविख्यात है। राजस्थान में बूँदी की धरती वीर प्रसविनी रही है, वहीं इसका कलात्मक वैभव भी अद्वितीय रहा। यहाँ की कला में भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की मध्यकालीन अक्षुण कला धारा का प्रवाह निहित होने के साथ कला की रचनात्मकता भी रही। हालांकि, यह भी गौरतलब है कि बूँदी के राजा–महाराजाओं और जागीरदारों का वास्तु–शिल्प एवं चित्र सृजन के उन्नयन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कलानुरागी हाड़ा शासकों ने सुन्दर गढ़, महल, चौरासी खम्बों की छतरी, शिकारगाहों के साथ–साथ कलात्मक बावड़ियों का निर्माण करवाया तथा युगान्तरकालीन भित्ति चित्रांकन भी, जो तत्कालीन शासकों और रचनाकारों की सौन्दर्यात्मक प्रवृत्ति को दर्शाती है। बूँदी के भित्ति चित्र और वास्तु–शिल्प एवं नक्काशी कला जगत में अनमोल धरोहर है और विश्वविख्यात भी। निःसंदेह, यहाँ के भित्ति चित्र, वास्तु–शिल्प, शैल चित्र और प्राकृतिक सौन्दर्य से आवृत झीलें देश–विदेश के कलाकारों, कला मर्मज्ञों, कला प्रेमियों एवं पर्यटकों को निरन्तर आकर्षित करते रहते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

कला में सौन्दर्य और आनन्द की जिज्ञासा दर्शकों और कला रूचिकर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है। मैं बतौर कला प्राध्यापक बून्दी की कला देखने हेतु भ्रमण पर चला जाता हूँ। मैं स्थानीय लोगों के अलावा देश–विदेश के सैलानियों को भी बून्दी की कला का अवलोकन करते देखता रहा हूँ। इससे प्रेरित होकर मैने 'बून्दी के पर्यटन व्यवसाय में कला का योगदान' विषय पर शोध पत्र लिखने का मानस बनाया। मैंने अनुभव किया कि बून्दी में पर्यटन से बढ़ते व्यवसाय को देखते हुए इस विषय पर शोध पत्र उपलब्ध कराया

जाये जो कला रूचिकर लोगों व विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा। इस शोध पत्र से बून्दी की कला की महत्ता तो बढ़ेगी ही साथ ही पर्यटन व्यवसाय में अभिवृद्धि भी होगी। कला के प्रचार–प्रसार से रोजगार के अवसर अधिक सुलभ होगें। इस प्रकार बून्दी के पर्यटन व्यवसाय से यह तथ्य भी उभर कर आया है कि इससे विदेशी मुद्रा की आमद होती रहेगी साथ ही भारतीय मुद्रा भण्डार में भी बढ़ोत्तरी होगी।

आदिम काल से मानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहा। वह स्थान या क्षैत्र जहाँ मानव भ्रमण कर ठहरता था या यात्रा के दौरान कुछ जानने या समझने तथा आनन्द प्राप्ति की लालसा रखता है। ऐसी अनेकानेक भ्रमण की ललक ने पर्यटन को जन्म दिया। पर्यटन को किसी एक भाषा में परिभाषित करना कठिन है। क्योंकि यह विषय समयानुकूल तार्किक भाषा के साथ बदल रहा है। कुछ विद्ववानों ने पर्यटन को अप्रवासी लोगों के ठहरने व यात्रा करने और सुख प्राप्ति से सम्बन्धित बातों के योग को माना है। पर्यटन के दौरान प्राप्त आनन्ददाय विचारधारा ही देश–विदेश के लोगो में प्रेम और विश्वास की भावना जागृत करता है। पयर्टन के इस दौर में ऐसे परिवर्तन भी देखने को मिलते है की पर्यटक एक स्थान से दूसरे क्षेत्र की यात्रा सुगमता से कर कलात्मक वस्तुओं और प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द लेकर जानकारी प्राप्त कर लेता हे। इस संदर्भ में अर्नेस्ट (Earnest) व ड्रिसेल (O.Drisell) विद्धानों का कहना है कि पिछले चालीस वर्षो में यात्रा और मनोरंजन की विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। यात्रा का प्रारम्भिक अर्थ खाली समय बिताने से था, इसमें व्यक्ति आराम के क्षण की तलाश में जाता था तथा प्राकृतिक दृश्यों, कलात्मक वस्तुऐं और दूसरे (बाहर) के स्थलों के पर्यावरण के बारें में अपनी जानकारी बढ़ाता था।[1] इको–ट्यूरिज्म की सम्भावनाओं के तहत बून्दी में अवस्थित पुरामहत्व के किलें, महलों, स्मारकों, बावडियों और झीलों आदि को पुनःविकसित एवं संरक्षित करने के प्रयास किये गये हैं।

बून्दी की कला पर्यटन विकास के विविध आयाम विकसित करने एवं प्रचार–प्रसार में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। हांलाकि, पर्यटन विकास से आर्थिक एवं सामाजिक लाभ होता है। चाहे होटल हो या रेस्तरां, कलाकृतियों की दुकानें, रेल, सड़क परिवहन हो या हवाई सेवाऐं, ऐतिहासिक कलात्मक स्मारक, महल, भवन हो या स्मारिकाऐं, रमणीय स्थल तथा अन्य कोई भी व्यवसाय के साधन सभी पर्यटन उघोग के अभिन्न अंग बन चुके हैं। पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए इन मूलभूत सुविधाओं को विकसित करना नितांत आवश्यक है। पर्यटक वस्तु के अभाव में पर्यटन व्यवसाय धूमिल हो जायेगा। पर्यटक वस्तु में पर्यटक सुविधायें वे अंग है जो कि स्वयं पर्यटकों के बहाव के प्रेरक बन जाते हैं, इन सुविधाओं के अभाव में पर्यटक उन आकर्षित स्थानों का आनन्द लेने के लिए निरुत्साहित होते हैं, ये सुविधायें आकर्षणों की सहायक (पूरक) होती हैं, इनके अन्तर्गत आवास सुविधायें, रेस्टोरेन्ट, स्काई लिफ्टस, पिकनिक स्थल आदि आते हैं।[2] पर्यटन व्यवसाय को डोर–टू–डोर जोडने की नितान्त आवश्यकता है। जिससे अधिक से अधिक पर्यटन व्यवसाय को बढावा मिलेगा और आय के नवीन स्त्रोत भी उपलब्ध होगें।

पर्यटन कला व सांस्कृतिक विचारों के आदान–प्रदान का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। वैश्वीकरण के इस दौर में पर्यटन के उद्देश्य व धारणाऐं परिवर्तित होती जा रही है। रोजगार की आवश्यकता इसका मूल कारण है। जिसके मध्यनजर पर्यटकों की सुख–सुविधाओं में आूमल–चूल परिवर्तन होने लगा है। जॉन नैसविट ने अपनी पुस्तक 'ग्लोबल पैराडाक्स' में कहा है कि 21 वीं सदी में पर्यटन विश्व का सबसे बडा उद्योग होगा तथा विश्व की अर्थव्यवस्था में पर्यटन विपणन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होगी। पर्यटन विपणन का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय के आधारभूत सुविधाओं के सुनियोजित विकास में सहायता प्रदान करता है।[3] पर्यटन एक मात्र ऐसा उद्योग है जिसमें भारतीय राष्ट्रवादी विचारों, ऐतिहासिक स्थलों, कला के विविध स्वरूपों तथा सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की क्रियाऐं आबद्ध है। भारत में प्राचीन काल से ही ''अतिथि देवों भवः'' की परम्परा रही है। जिसके कारण यहाँ राज्य स्तरीय पर्यटक ही नहीं बल्कि देश–विदेश के पर्यटक व कला रूचिकर लोगों की आवाजाही निरंतर बनी रहती है।

बून्दी की कला का पर्यटन मार्केटिंग में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ पर्यटकों के लिए कला के स्थल व रमणीय दृश्यों के भ्रमण की सुनियोजित व्यवस्था उपलब्ध है। इनकी सुख–सुविधाओं को ध्यान मे रखकर यहाँ वैश्विक तर्ज पर व्यवस्था की गई है। किले के आस पास अनेक छोटे–बडे होटल, पेइंग गेस्ट हाउस, इनकी आवश्यकताओं के मुताबिक बाजार में अनेक दुकानें हैं। इतना ही नहीं, यहाँ नजदीक ही नवल सागर झील है जो प्राकृतिक आवरण से सुशोभित है। लगभग आधा किलोमीटर के दायरे में बस स्टेण्ड है। परिवहन हेतु यहाँ विभिन्न प्रकार की लग्जरी कारें और ऑटो रिक्शा की व्यवस्था है। पर्यटन उघोग को आकर्षित करने की यहाँ वह तमाम व्यवस्था मौजूद है जो कला व सांस्कतिक और प्रकृति के आकृर्षण के वजूद को बयां करती है। पर्यटन स्थल, परिवहन एवं आवासीय सुविधा पर्यटन के तीन आधारभूत अंग है। इन तीनों मे से पर्यटन स्थल (Location) सबसे महत्वपूर्ण है। यह स्थल अपनी प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक या अन्य किसी आमोद–प्रमोद की विशेषता में से किसी एक कारण से पर्यटन के लिए आकर्षण रखता है। यह आकर्षण ही पर्यटन उद्योग के संसाधन हैं।[4] पर्यटन मार्केटिंग एवं व्यवसायिक विकास के मूल उद्देश्य स्वदेशी एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के क्षेत्र में संवर्धनात्मक कार्य कर उसे अग्रसर करना है। कलात्मक वस्तुओं और सांस्कृतिक मनोरंजन के साधनों से जुड़े संघटकों के कार्यकलापों का समुचित विनिमयन पर्यटन उद्योग को परिवर्धित और परिमार्जित करता रहा है। पर्यटक बून्दी के तीज त्योंहार, बून्दी उत्सव और मेलों में यहाँ की सांस्कृतिक विचारधारा से रूबरू होते रहे हैं।

बूँदी में पर्यटन की दृष्टि से शीतकालीन या सर्दी में भ्रमण करना लाभदायक रहता है। वैसे तो यहाँ पर

देश–विदेश से पर्यटक सालभर आते जाते रहते हैं, परन्तु सर्दी में इनकी संख्या अधिक रहती हैं। यहाँ फ्रांस, चीन, जापान, हांगकांग, जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस, कोरिया, इण्डोनेशियां, नेपाल इत्यादि देशों से पर्यटक आते हैं। बूँदी के पर्यटन केन्द्र में पर्यटकों को बूँदी की ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान के पर्यटन स्थलों की जानकारी मिलती है। इतना ही नहीं, पर्यटकों को मुफ्त में बूँदी के पर्यटन स्थलों से सम्बन्धित केटलॉक, बुकलेट इत्यादि सामग्री भी सुलभ करवायी जाती है। बूँदी की कला और सौंदर्यात्मक दर्शनीय स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

बूँदी दुर्ग

बूँदी में पहाड़ी पर स्थित यह गढ़ पर्यटकों को दूर से ही आकर्षित करता है। दिन के प्रकाश में इसकी आभा वास्तविक नजर आती है वहीं रात में फ्लड लाइटों की रोशनी में जगमगाता हुआ दिखाई देता है। पर्यटक इस दुर्ग में प्रवेश हाथीपोल के भव्यद्वार से होकर करते हैं। इसके दोनों और पत्थरों के उत्कीर्ण दो विशाल हाथी है तथा इसके आगे ही दीवाने आम बना है। इसका निर्माण राजा रतनसिंह के काल में हुआ था। उम्मेद महल के नाम से प्रसिद्ध चित्रशाला का निर्माण राव उम्मेद सिंह (1749–73 ई.) ने करवाया था। इनकी दीवारों पर निर्मित चित्र राव उम्मेद सिंह तथा बिशन सिंह (1773–1821 ई.) के समय के हैं।[5] यहाँ चित्रशाला में विविध विषयों के भित्ति चित्र बने हैं। इस रूप में यहाँ धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और पशु–पक्षियों तथा शिकार के विविध दृश्य दर्शनीय हैं। राव उम्मेद सिंह ने चित्रशाला के पास अपने इस्टदेव श्रीरंगनाथ जी की स्थापना की। इसलिए इस चित्रशाला को रंगमहल के नाम से भी जाना जाता है।[6] यह रंगशाला अथवा चित्रशाला केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग के अधीन दर्शकों और पर्यटकों के लिए अवलोकनीय है।

राजस्थान में भित्ति चित्रांकन की सुदीर्ध परम्परा रही है। राज्य की सभ्यता और संस्कृति को गौरवान्वित करने का श्रेय बूँदी के भित्ति–चित्रों का भी रहा है। यहाँ के भित्ति चित्र राज्य की विविध शैलियों से प्रभावित होने के बावजूद भी मौलिकता और कला की रचनात्मकता के साथ पल्लवित होती रही। चित्रशाला में भित्ति–चित्रों का वजूद आज भी मौजूद है, जो निरन्तर देश–विदेश के पर्यटकों को लुभाते रहते हैं।

बूँदी चित्रशाला में रचे गये भित्ति चित्र तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन को दर्शाते हैं। कृष्ण–चरित्र के बड़े पेनल में बने विविध रूपों का रूपांकन धार्मिक भावनाओं से ओत–प्रोत दिखाई देते हैं। धार्मिक भावना के तहत रामायण पर भी चित्रांकन सटीक प्रतीत होता है। भारतीय संस्कृति, ऐतिहासिक और सामाजिक विचारधारा से परिपूर्ण विषयों के रूप में सामंति जीवन शौर्यता से परिपूर्ण रूपांकन, राजकीय समारोह, राग–रागनियाँ, नायिका–भेद, प्रेमाख्यान, पौराणिक प्रसंग, तीज–गणगौर की सवारी, ढ़ोला–मारू, शिकार के विविध दृश्य, हाथियों की लड़ाई, विविध पशु–पक्षी, प्राकृतिक सुषमा और स्थापत्य का मनोरम चित्र एवं संस्कृत और हिन्दी ग्रंथों के स्फूट पदों पर शिद्दत के साथ चित्रण हुआ है। विशाल भव्य महल में स्थित बाग–बगीचे में लताएँ एवं फुलवारी, घुड़ सवार और पैदल चलते सैनिकों की लम्बी कतार तथा शिकार के दृश्यों का वैभवपूर्ण रूपांकन तत्कालीन परिवेश को दर्शाता है। महफिल में नृत्य एवं गायन के समूह संयोजन भी बड़े पैनल के रूप में रूपायित हैं। राव बिशन सिंह को महफिल में नृत्य का आनन्द लेते हुए राजशाही सामंति परिवेश के रूप में देखा जाता है। नायिकाओं में कमनियता, स्फूर्ति से भरी हुई, गौरवर्ण और इकहरी बदन वाली अपने लावण्यमय रूपांकन एवं भावनात्मक मुद्राओं से दर्शकों को आनन्द और मंत्रमुग्ध कर देती है। राग–रागनियों के रूप में राग भैरवी, राग दीपक आदि के चित्रण में नायिकाओं की कमनियता, लयात्मकता और लावण्य को महसूस किया जा सकता है। रचनाकारों ने हिन्दी और संस्कृत के स्पूद पदों को अपनी शैली में बांधकर काव्यानुरूप रूपाकारों का सृजन किया है। बून्दी शैली ने रीतिकालीन काव्य को चक्षुगोचर बनाने में कोई प्रयत्न शेष नहीं छोडा। सूक्ष्म से सूक्ष्म काव्य भाव को भी रेखाओं की परिधी में बांधा, साथ ही काव्य में अपनी कल्पना की उडानों से अनायास ही एक नवीन रुप प्रदान किया।[7] बून्दी राजघराने में दरबारी कवि भी निवास करते थे। दरबारी कवियों ने अनेक साहित्यिक ग्रथों की रचना की जो यहाँ के कलामय वातावरण और शोर्यता को गौरवान्वित करता है। बून्दी राज्य के अधिक समय तक दरबारी कवि रहने वाले मतिराम रीतिकालीन कवियों में प्रमुख है। इन्होनें अनेक ग्रन्थों की रचना की। मतिराम के सम्पूर्ण साहित्यिक ग्रंथों में 'रसराज' सर्वाधिक प्रसिद्ध और उत्कृष्ट रचना है।[8] इनकी रचनाओं में श्रृंगारिक भावों की रसानुभूति है। राधा–कृष्ण के प्रेम–प्रसंग, श्रृंगारिक चित्र और नायक–नायिकाओं की कमनीयता के विविध रुप, उनके उद्दीपन, साँगोपाँग संयोग, वियोग आदि सरस, सहृदय भावाभिव्यक्तिपूर्ण रुपों के साथ रूपायित है।

बूँदी में प्रकृति चित्रण के अवलोकन से यह प्रतीत होता है कि चित्रों में रसमय दृश्यावली और वातावरण से ओत–प्रोत रूपों का अंकन सादगी से हुआ है। इतना ही नहीं, चित्रों में प्रकृति का अंकन उद्दीपन रूप को उद्भाषित करता है। चित्रशाला में हाथियों व घोड़ों के विविध चित्र चित्रित हैं। हाथियों की लड़ाई, बिगड़े हाथी को वश में करने की प्रक्रिया और घोड़ों के अंकन में अपूर्व गति व शक्ति निहित है। इनका गतिमान और बारिक रेखाओं के माध्यम से ऊर्जापूर्ण रुपांकन किया गया है, जो बूँदी शैली की निजी विशेषताओं को दर्शाता है।

छत्रमहल

बूँदी किले में स्थित छत्रमहल अपनी कलात्मक आभा से आज भी सुशोभित है। राव शत्रुशाल (1631–1658 ई.) ने राजप्रासाद में भव्य एवं आकर्षक छत्रमहल निर्मित करवाकर बूँदी के महलों को गौरवान्वित किया।[9] इस महल में चित्रशाला में अंकित भित्ति चित्रों की भाँति विविध विषयों के सुन्दर चित्र रूपायित हैं, जो अब समयानुकूल वातावरणीय प्रभाव के साथ जीर्णावस्था में देखे जाते हैं।

बादल महल

बूँदी किले में स्थित बादल महल का निर्माण रावभोज ने (1885–1907 ई.) में करवाया था। यहाँ भित्ति

चित्रों का अनुपम संसार मुखरित होता देखा जाता है। यहाँ कलाकारों ने हाथियों के चित्रण में भावपूर्ण सिद्धहस्त रेखाओं का सिद्दत के साथ इस्तेमाल कर इनकों आकर्षक रूप प्रदान किया है। छत पर कृष्ण–चरित्र के विविध चित्रों में पारम्परिक वेश–भूषा अलंकृत होने के साथ धार्मिक भावना की अभिव्यंजना है। इसी प्रकार नायक–नायिकाओं के अंकन में रासलीला मनमोहित है।

तारागढ़ दुर्ग

इस ऐतिहासिक दुर्ग का निर्माण राजा वरसिंह ने करवाया था। यह दुर्ग 1426 मी. ऊँचे पहाड़ पर स्थित है।[10] इसकी कलात्मक संरचना अद्भुत और अनूठी है। यहाँ पर एक विशाल जलाशय है, जो कभी गढ़ की जलापूर्ति करता था। किले के भीतर भीम बुर्ज की शिल्प कला उत्कृष्ट है।

चौरासी स्तम्भों वाला स्मारक

यह स्थल वास्तु–शिल्प एवं नक्काशी कला के लिए पर्यटकों को निरन्तर आकर्षित करता रहता है। स्थापत्य एवं तक्षण कला के अनूठे नमूने इस विशाल 84 खम्भों से निर्मित छतरी का निर्माण बूँदी के रावराजा अनिरूद्ध सिंह ने सन् 1683 ई. में अपने धायभाई देवा की स्मृति में करवाया था।[11] चंपाबाग में स्थित ऊँची चौकी पर बनी दो मंजिला इस उत्कृष्ट छतरी के चारों ओर जंघा भाग पर लगे पाषाण पट्टों पर बड़ी आकृति के हाथी–घोड़े तथा अन्य पशुओं की विविध उत्कीर्ण आकृतियों के पैनल हैं। इतना ही नहीं, यहाँ पर शिव–पार्वती, राधा–कृष्ण, विष्णु का वराह अवतार, नाभि से ब्रह्मा की उत्पत्ति, गजलक्ष्मी, ढ़ोला–मारू व समुद्र मंथन जैसे पौराणिक विषयों को मनमोहक एवं आकर्षक रूपों के साथ उकेरा गया है। छतरी के अन्दर की छत पर विविध भित्ति चित्र अंकित हैं। यहाँ हाथियों की लड़ाई, मुग्ध हिरणों और श्रृंगार सज्जित नायिकाओं, अप्सराओं के मनमोहक रूपांकन के साथ–साथ संगीतज्ञों, नर्तकियों, बांसुरी व वीणा बजाती सुन्दरियों के भित्ति चित्र मनोहारी प्रतीत होते हैं।

शिकार बुर्ज

प्राकृतिक सुषमा से आवृत शिकार बुर्ज अधिकतर सैलानियों के लिए रमणीय स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।

क्षारबाग

बूँदी के शासकों के पूर्वजों को समर्पित जगह को क्षार बाग कहा जाता है। यह बाग स्थापत्य कला के रूप में जाना जाता है। यहाँ पर महाराजाओं की स्मृति में 66 छतरियाँ बनी हुई हैं। राव छत्रसाल की छतरी के पास जहाँ 64 रानियाँ सती हुई थीं, यह जगह एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में भी जाना जाता है।

फूल सागर

बूँदी सिटी से लगभग 7 किलोमीटर दूर पहाड़ियों के मध्य यहाँ राजा रामसिंह द्वारा एक कुण्ड व महल बनवाये गये थे तथा राजा भोज सिंह की पत्नी ने यह तालाब बनवाया था। यह स्थान प्राकृतिक आभा से सुशोभित है। यह स्थान पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

जैतसागर

इसका निर्माण जैता मीणा ने करवाया था। यह झील प्राकृतिक सौन्दर्य और सुषमा से परिपूर्ण है। बूँदी बस–स्टेण्ड से लगभग दो किलोमीटर दूर इस झील के किनारे लाईटें लगी हुई हैं जो रात्री की रोशनी में इसकी सुन्दरता को द्विगुणित करती है।

सुखमहल

जैतसागर झील पर सुन्दर व आनन्ददायक ग्रीष्मकालीन महल बना हुआ है। यहाँ एक सुन्दर बगीचा है और हरियाली की मनमोहकता पर्यटकों को निरन्तर आकर्षित करती रहती है। प्रायः यह भी माना जाता है कि सुखमहल से मुख्य महलों तक एक भूमिगत सुरंग भी निकलती है, जिसका प्रयोग राजा–महाराजा युद्ध के समय किया करते थे।

नवल सागर

यह कृत्रिम झील होने के साथ रमणीय स्थल भी है। आगंतुकों के लिए यह दृश्य सुन्दर है। यहाँ आर्टिफिशियल कब्र के साथ एक टापू पर एक शिव मंदिर बना है।

रामेश्वर मंदिर

बूँदी से 20 किमी दूर केव मंदिर (शिव मंदिर) है। इसे 1699 में A.D. में Rani Nothavati ने बनवाया था। यह स्थल एक पिकनिक स्पॉट के रूप में प्रसिद्ध है। अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ, पहाड़ी से मौसम के अनुकूल गिरता झरना पर्यटकों को निरन्तर आकर्षित करता रहता है।

भीमलत

बूँदी से 35 किमी. दूर Waterfall एवं शिव मंदिर है। यहाँ बारिश के मौसम में 40 फीट गहरी खाई में झरना गिरता है जिसका आनन्द पर्यटक निरन्तर लेते रहते हैं।

केशव मंदिर

बूँदी से 45 किमी. दूर केशवराय पाटन में प्राचीन मंदिर वास्तुकला व धार्मिक आस्था का अनुपम उदाहरण है। यहाँ पर सुन्दर उद्यान एवं मूर्तिकला सुन्दर व अद्वितीय है। चम्बल नदी के किनारे यह स्थल सभी मौसम में सुहावना लगता है। धार्मिक आस्था और प्राकृतिक सुन्दरता के साथ–साथ कला का अद्भुत स्थल होने के कारण पर्यटक निरन्तर आते जाते रहते हैं।

पार्क

बूँदी में छोटे–छोटे अनेक पार्क हैं। नेहरू उद्यान, आजाद पार्क, सुख महल पार्क, नौ सेना सागर पार्क, स्मृति कुंज आदि। स्मृति कुंज जैतसागर के किनारे बना हुआ है। यहाँ क्षणभंगुर फव्वारा रात में अद्भुत लगता है।

इनके अलावा बूँदी में विविध नगर श्रेष्टों की हवेलियाँ और कलात्मक बावड़ियाँ जैसे कि रानीजी की बावड़ी, नागर–सागर कुण्ड आकर्षण का केन्द्र है। रानीजी की बावड़ी में स्थापत्य कला के साथ–साथ मूर्तिकला का आकर्षण भी है। यहाँ पर देवी देवताओं की मूर्तियाँ उत्कीर्ण है साथ ही सुन्दर नक्काशी भी देखी जाती है। बून्दी में जैतसागर से आगे बाणगंगा के किनारे पर स्थित केदारेश्वर मंदिर के सामने एक छोटी सी छतरी में शिवलिंग प्रस्थापित है। बून्दी में अनेक छोटे–बडे मन्दिर है

जिनमें प्राचीन व आधुनिक मूर्तियाँ प्रस्थापित है। शिव व गणेश जी की आराधना यहाँ के लोगों में आध्यात्मिक भावना के साथ रची बसी है। निःसंदेह, विशाल शिवलिंग लंका गेट रोड पर बने मंदिर में भी पूजनीय है। नगर के छोटे–बडे मंदिरों में गणेश की विभिन्न प्रतिमाएँ आध्यात्मिक विचारों को प्रकाशित करती है। नवल सागर झील में स्थित मंदिर में पाँच प्रतिमाओं का अनोखा संयोजन है। गज लक्ष्मी की प्रतिमा एक बडे रमणीक स्थान पर स्थित है। नगर के अन्दर राजप्रसादों ,स्नान करने के घाटों, पहाड और उद्यान से घिरे नवलसागर अथवा छोटा तालाब के उत्तरी तट पर बने शिव मंदिर में यह प्रतिमा स्थित है। इस मंदिर में कुल पाँच प्रतिमाऐं हैं, जिनमें शिव, पार्वती की दो प्रतिमाऐं, लक्ष्मी और गणेश का अपूर्व संयोजन है।[12] इनके अलावा यहाँ पर हनुमान मंदिर, चौथ माता मंदिर, हंसा देवी मंदिर, साई बाबा मंदिर आदि है। इसी प्रकार बूँदी जिले में इन्द्रगढ़ एवं दुगारी किले में कलात्मकता देखी जाती है। बूँदी क्षैत्र के शैल चित्र यहाँ के आदिम मानव की जीती–जागती कहानी को बयां करते हैं। गरड़दा, पलका, गोलपुरा, रामेश्वर, धारवा (Dharwa), कमलोई, भीमलत, बाँका (Banka), नलदहटो (Naldeheto) आदि स्थानों पर शैल चित्र बने हैं। देश–विदेश के अनेक पर्यटक इनको देखने व अध्ययन करने आते हैं। अतः बूँदी का सम्पूर्ण कलात्मक वैभव पर्यटकों को आकर्षित करता रहता है। इससे यहाँ की कला का प्रचार–प्रसार तो हो ही रहा है वहीं यहाँ के निवासियों को रोजगार के अवसर भी सुलभ हुए हैं।

बूँदी जिले में प्रकृति का अकूत खजाना है। यहाँ के पर्यटन स्थल प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत–प्रोत होने के बावजूद यहाँ पर पर्यटन का विकास और लोगों की आवाजाही आशानुरूप नहीं हो पा रही है। सरकार के पास पर्याप्त बजट का टोटा बना रहता है। ऐसे में उन रास्तों को खोजा जा रहा है जिससे लोगों की भागीदारी से पर्यटन का विकास अधिक से अधिक हो सके। पर्यटन विकास के लिए तीन बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाने लगा है– प्रोफिट, पीपुल, प्लानेट अर्थात् लाभ भी हो, लोग भी जुड़ें और प्रकृति का संतुलन भी बना रहे। इतना ही नहीं, पर्यटकों को ग्राम्य संस्कृति से रूबरू कराने के लिए विलेज टूरिज्म, इको व एडवेंचर टूरिज्म को शामिल किया जाये। लोगों को डोर–टू–डोर जोड़ा जाए। पर्यटकों को पर्याप्त सुविधा मुहैया करायी जाये। प्राचीन मंदिरों, किलों, गढ़, महल और अन्य पुरास्थलों को उनके स्वरूप को बरकरार रखने के लिए सारसंभाल एवं जीर्णोद्धार कार्य संग्रहालय एवं पुरातत्त्व विभाग की देखरेख में कराये जाए। पर्यटकों को बढ़ावा देने के लिए इको फ्रेंडली सुविधा देना नितान्त आवश्यक है। इससे हमारी पुरा सम्पदा तो बरकरार रहेगी साथ ही आय के नवीन श्रोत भी बनते चले जायेंगे।

निष्कर्ष एवं एक भावी शोध संभावनाएँ

बून्दी की कला का पर्यटन व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पर्यटन व्यवसाय से यहाँ के लोगों को रोजगार के अवसर तो सुलभ हुये ही साथ ही पर्यटन को बढावा देने से बून्दी की कला का प्रचार–प्रसार भी होता रहा है। यहाँ का कलात्मक वैभव अद्वितीय होने के साथ–साथ सौन्दर्यात्मक विचारों से द्विगुणीत भी है। प्राकृतिक सुन्दरता से आवृत्त यहाँ के ऐतिहासिक स्थल, महलों में सृजित भित्ति चित्र, स्थापत्य कला के उत्कृष्ट भवन व बावडियाँ, इनकी शोभा को सुशोभित करती कलात्मक नक्काशी तथा शैल चित्र, लघु चित्र और नगर श्रेष्टों की हवेलियाँ इत्यादि विषयगत स्वरूप एक भावी शोध संभावनाओं को उजागर करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *बन्सल, डॉ. सुरेश चन्द्र : पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन आधारभूत सिद्धांतः मीरा प्रकाशन, 2सी– 2898, डी. एस.ओ. कम्पाउंड, सहारनपुर, पृष्ठ 01*
2. *नेगी, डॉ. जगमोहन : पर्यटन–मार्केटिंग एवं विकासः टी.एस.बिष्ट, तक्षशिला प्रकाशन, 98 ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 24*
3. *सिंह, जगदीश : पर्यटन व्यवसाय एवं विकास : कमाल बिष्ट, तेज प्रकाशन, 98, शक्ति भवन दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 152*
4. *बन्सल, डॉ. सुरेश चन्द्र : पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन आधारभूत सिद्धांत : मीरा प्रकाशन, 2 सी – 2898, डी.एस.ओ. कम्पाउंड, सहारनपुर, पृष्ठ 09*
5. *उम्मेद महल में स्थित चित्रशाला के बाहर नोटिस बोर्ड पर अंकित लेख, बूँदी का किला।*
6. *सम्पादक : उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर : आकृति, हाड़ौती कला विशेषांक : जुलाई–सितम्बर, 1997, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 05*
7. *चौहान, सुरेन्द्र सिंह : राजस्थानी चित्रकला : राहुल पब्लिशिंग हाउस, डब्लू. पी. – 575, वजीरपुर, अशोक विहार दिल्ली, पृष्ठ 81*
8. *चौहान, सुरेन्द्र सिंह : राजस्थानी चित्रकला : राहुल पब्लिशिंग हाउस, डब्लू. पी. – 575, वजीरपुर, अशोक विहार दिल्ली, पृष्ठ 142*
9. *सम्पादक : उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर : आकृति, हाड़ौती कला विशेषांकः जुलाई–सितम्बर, 1997, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 07*
10. *उपाध्याय, सुनील, कु. गणपत सिंह शक्तावत : रंग रंगीलों राजस्थान, चिराग प्रकाशन, उदयपुर, पृष्ठ 31*
11. *चौरासी खम्भों की छतरी, बूँदी के बाहर लगे शिला पट्ट पर अंकित संदर्भ से लिया गया है।*
12. *प्रधान सम्पादक : चतुर्वेदी, त्रिलोक नाथ : राजस्थान का वैभव : भारतीय संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन परिषद, 3062, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 165–166*